शोध पत्र

शीर्षक:

हिमालय क्षेत्र में सामाजिक, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय पक्षों के उभरते आयाम: नई दृष्टि एवं समझ का प्रयास

डॉ. वीरेंद्र सिंह नेगी

प्रोफेसर, भुगोल विभाग

शहीद भगत सिंह सांध्य महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

एसोसिएट

नवम्बर 2022

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

29 नवम्बर 2022

प्रस्तावना:

प्रारंभ से ही हमारे लिए ही नहीं बल्कि विश्व के सभी लोगों के लिए हिमालय एक अपार उत्सुकता का क्षेत्र रहा है। एतिहासिक क्रम में हिमालय आज तक यात्रियों, खोजकर्ताओं, आश्रमधर्मियों, अध्यात्मीजनों , बुद्धिजीवियों, अध्ययनकर्ताओं, शोधार्थियों, पर्यटकों और अनन्य विकास कार्यों की गंतव्य स्थली बना हुआ है। आधुनिक समय में जैसे-जैसे सूचना, संचार और यातायात की सुविधाएं बढ़ रही हैं साथ ही हिमालय में मानव अगम्यता वह भौतिक बाधाएं क्षीण होती जा रही हैं। इस कारण से हाल के दशकों में हिमालय संबंधी वर्षों से सृजित साहित्य व ज्ञान का संवर्धन और अधिक तीव्रता से हुआ है। स्वाभाविक है कि स्थापित व उभरते इस व्यापक साहित्य कोश में हिमालय के प्रति परस्पर विरोधाभासी पक्ष-प्रतिपक्षी विचारों का संचयन और संग्रह हम सबके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

तेजी से जुड़ती हुई दुनिया में, परस्पर आपसी अन्तर्सम्बन्धों ने उन विभिन्न विधाओं की अभिव्यक्ति की है जिनसे मनुष्य ने अपने परिवेश को समझा और अनुभव किया है। हिमालयी क्षेत्र भी ऐसे कई मनुष्यों और अन्तर्सम्बन्धों की स्थली है।

भले ही हिमालय राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से विखंडित है और हमेशा रहने वाला है, हिमालय एकल भौगोलिक इकाई के लिए उपयोग किया जाने वाला एक शब्द है, लोग अक्सर इस बात को अनदेखा कर देते हैं कि यह इकाई अपने में एक एकल विशिष्ट पारिस्थितिक पहचान का गठन करती है।

लंबे एतिहासिक क्रम में हिमालय के संबंध में जानकारी, यात्रा वृत्तांतों, शोधलेखों, पुस्तकों, रिपोर्टों और अनन्य साहित्यिक माध्यम से अनेकों लेखकों, शोधार्थियों व रिपोर्टरों के द्वारा हमारे समक्ष लाया जाता रहा है, जो कि बहुतायत में गैर हिमालयी व्यक्तियों द्वारा लिखित है।

देखा गया है कि सामान्यतः इन पुस्तकों, लेखों, वृतान्तों, अध्ययन और शोघ ग्रंथों में शामिल स्थानिक उल्लेख, शोध, विषयक और संस्मरण स्वतंत्र रूप में पाए जाने के कारण एक दूसरे के साथ पूरकता और एकरूपता के अभाव में हिमालय के संबंध में एकल संपूर्णता के भाव की पूर्ति नहीं कर पाते हैं। फिर भी खोजने पर कुछ साहित्य ऐसा अवश्य उपलब्ध है जो कि 'हिमालय' एकल भौगोलिक इकाई के स्वरूप की मूल भावना का सही प्रकार से प्रकटीकरण करता है। ऐसी कुछ 'रीडिंग्स' पुस्तकों को आधार बनाकर हिमालय की एकल पहचान खोजने की दृष्टि से प्रस्तुत प्रपत्र तैयार किया गया है।

कार्य योजना:

- पुस्तकों में समाहित हिमालय सम्बंधित ज्ञान का असीम भण्डार का विवेचन।
- घुमक्कड़ी, तीर्थाटन, शोध, पर्यटन एवं लेखन आकर्षण का मुख्य कारणों व लेखन सामग्री की समीक्षा।
- पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों और दस्तावेजों में से कुछ चयनित स्रोतों (पुस्तकों) का अध्ययन के लिए चुनाव।
- हिमालय के विषय में विभिन्न धारणाओं, छवि, दृष्टिकोण और पूर्व निर्धारित समझ से उध्दत अध्ययन का विवेचन।
- हिमालय के व्यापक अनछुए परिचय के अनुरूप सही दृष्टि एवं समझ विकसित करने का प्रयास।
- हिमालय सम्बंधित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय कार्य परियोजनाओं व अध्ययन के लिए सुस्पष्ट नई दृष्टि और नए आयाम प्रस्तुत करना।

हिमालय: परिचय और समझ में भिन्नता

हिमालय सामान्यतः अपने भौतिक आकर्षक के कारण लोगों को आकर्षित करता रहा है। यहां की ऊंची पहाड़ियां, सुंदर मनोरम भूदृश्य, बर्फीले पहाड़, शीतकालीन सौम्य रमणीय स्थल की छवि से हिमालय की विशेष पहचान आगंतुकों और हिमालयेतर निवासियों के मस्तिष्क में बसती है। अपनी विशाल चोटियों, भव्य भूदृश्यों, समृद्ध जैव विविधता और सांस्कृतिक विरासत के साथ भारतीय हिमालयी क्षेत्र दीर्घकाल से भारतीय उपमहाद्वीप और दुनिया भर से आगंतुकों एवं तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता रहा है।

वैसे हिमालय एक पर्वत तन्त्र है जो भारतीय उपमहाद्वीप को मध्य एशिया और तिब्बत से अलग करता है। यह पर्वत तन्त्र मुख्य रूप से तीन समानांतर श्रेणियां- महान हिमालय, मध्य हिमालय और शिवालिक से मिलकर बना है जो पश्चिम से पूर्व की ओर एक चाप की आकृति में लगभग 2400 कि॰मी॰ की लम्बाई में फैला है।

हम सभी ने पढ़ा है कि भारतीय उपमहाद्वीप की जलवायु में हिमालय अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अपनी उच्च तुंगता, लंबाई एवं अवस्थिति के कारण वे बंगाल की खाड़ी और अरब सागर से आने वाले ग्रीष्मकालीन मानसून को प्रभावी ढंग से रोकता है और वर्षा या बर्फ के रूप में वर्षण का कारण बनते है। इसके अलावा, हिमालय मध्य एशिया की ठंडी महाद्वीपीय वायु राशियों को भारत में प्रवेश करने से बाधक बन अति शीत प्रकोप से बचाव करता है।

हिमालय अपनी प्राकृतिक सुंदरता और स्वस्थ वातावरण के कारण यहाँ बड़ी संख्या में पर्यटन स्थलों का विकास हुआ है। हिमालय के पहाड़ी क्षेत्र ठंडी और आरामदायक जलवायु प्रदान करते हैं जब पड़ोस के मैदानी इलाके भीषण गर्मी की चपेट में होते हैं। आधुनिक गतिशीलताओं ने हिमालय में पर्यटन को सामाजिक आर्थिक विकास के प्रमुख चालक में बदल दिया है। स्थानीय पर्वतीय आबादी के लिये पर्यटन मूल्यवान आर्थिक एवं व्यावसायिक अवसर प्रदान करता है और राज्य सरकारों एवं निजी उद्यमियों के लिये यह राजस्व और लाभ प्रदान करता है। पर्यटन के वर्तमान प्रचलित मॉडल को पर्यावरणीय क्षति एवं प्रदूषण, सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत के लिये खतरा, दुर्लभ संसाधनों के भारी दोहन और समाज में नकारात्मक बाह्यताओं के संभावित कारण के स्रोत के रूप में देखा जाता है। उल्लेखनीय है कि पर्वतीय क्षेत्रों का अपनी एक सूक्ष्म-जलवायु होती है। इसके अद्वितीय जीवों और वनस्पतियों की एक संक्षिप्त प्रजनन समय-सीमा होती है और ये किसी भी हस्तक्षेप या परिवर्तन के प्रति संवेदनशील होते हैं। असंवहनीय पर्यटन प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ सकता है। विशाल हिम-क्षेत्रों और प्रचुर मात्रा में वर्षा के साथ-साथ हिमालय में मौजूद बड़े हिमनद भारतीय उपमहाद्वीप की विशाल नदियों के पोषण के आधार हैं।

हिमालय पहाड़ी क्षेत्रों से नीचे मैदानी क्षेत्र में उतर कर ये नदियाँ अपने साथ भारी मात्रा में जलोढ़ मृदा लेकर आती हैं। यह जलोढ़ उपजाऊ मृदा के रूप में उत्तर भारत के विशाल मैदान में जमा होती है, जिससे यह मैदान विश्व के सबसे उपजाऊ भूमि क्षेत्रों में से एक बनता है। जो विश्व की 20 प्रतिशत जनसंख्या का भरण पोषण करता है। ये नदियाँ अपनी जलराशि का एक बड़ा भाग हिमनदों के पिघलने से प्राप्त करती हैं, इस प्रकार ये भारत की ऊर्जा सुरक्षा एवं जल सुरक्षा आवश्यकताओं के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। उपमहाद्वीप की की लगभग 35% तापीय बिजली और 55% जलविद्युत हिमालय से निकलने वाली नदियों के जल पर ही निर्भर है।

घुमक्कड़ी में पारंगत और ज्ञान के अगाध समुद्र राहुल सांकृत्यायन ने हिमालय से सम्बंधित रोचक सामाजिक,ऐतिहासिक और सांस्कृतिक तथ्यों का अनुपम संकलन प्रस्तुत किए हैं । साथ ही उनकी यात्राओं (तीर्थ, नगर, रमणीय स्थल इत्यादि) का सुन्दर, अत्यंत पठनीय और विचारोत्तेजक वर्णन भी है। वे जिस स्थान की यात्रा करते हैं वहाँ के दर्शनीय तीर्थ / धार्मिक स्थलों के इतिहास की ख़ूब पड़ताल भी करते हैं। लोककथाओं , जनश्रुतियों इत्यादि को भी उचित स्थान तथा सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं । बदरीनाथ , केदारनाथ इत्यादि धामों को शिल्प कला , शिलालेखों तथा लोकवार्ता के प्रकाश में एक नवीन दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

हिमालय पर्वत श्रृंखला वन संसाधनों से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ समुद्र तल से ऊँचाई के अनुरूप उष्णकटिबंधीय वनस्पति से अल्पाइन वनस्पति तक विविधतापूर्ण वह समस्त

वनस्पति आवरण उपस्थित है जो सामान्य रूप में पृथ्वी के धरातल पर भूमध्य रेखा से ध्रुवों के मध्य पाया जाता है।

वर्तमान परिदृश्य:

पहाड़ी धरातल, शीत क्षेत्र, मनभावन दृश्य, बर्फीली चोटियां, प्राकृतिक सौंदर्य जैसे पक्षों का व्यापक अध्ययन आवशयक हो जाता है। सामान्य जन के लिए हिमालय हिल स्टेशन, घने जंगल, जीव जंतु, अल्पाइन घास क्षेत्र, चोटियां, साफ, आसमान है। कुछ अन्य के लिए हिमालय तीर्थयात्राएं, देशाटन, साधना, शोध, अध्ययन, आयुर्वेद, स्वास्थ्य, जैविक उत्पाद, हरबल, जड़ीबूटी से संबंधित है।

अध्ययनकर्ताओं के लिए हिमालय जनजातियां, विशिष्ट मान्यताएँ, रीति रिवाज, आस्था विश्वास से संबंधित है। विशेषज्ञों के लिए सीमा-विवाद, सामरिक स्थान, चौकियां, सैन्य गतिविधि, आतंकवाद, अस्थिरता से संबंधित है। तीर्थयात्रियों के लिए हिमालय देव-भूमि, पवित्र हिन्दू धर्म स्थल, शिव-धाम, देवी-देवता, किंन्नर, बौद्ध धर्म स्थल, केंद्र, किले मोनेस्ट्री से संबंधित है। उसी प्रकार से हिमालय पर्यटन, साहसिक खेल, मनोरंजन, पर्वतारोहण, तपस्वियों, ऋषियों, योगियों,अध्यात्म से भी संबंधित है। इसके साथ ही हिमालय बड़े पैमाने पर विकास बनाम विनाश पर्यावरण समस्याएँ जैसे की भूस्खलन, हिमस्खलन, बाढ़, हिमपात, आपदाएं दुर्घटनायें, भूकंप, वनाग्नि और प्रदुषण का क्षेत्र भी है। आधुनिक शोध के विषय प्राकृतिक संसाधन, हिमनद, नदियां, जलवायु परिवर्तन, वाटर टावर्स, थर्ड पोल आदि वर्तमान समय के ज्वलंत विषय है। विकास की अंधी दौड़ में आज के समय में व्यवसाय, निवेश, अभिगम्यता, परिवहन, निर्माण, विनिर्माण, जलविद्युत परियोजनाएं एक समस्या का स्वरुप बना हुआ है। ऐतिहासिक यात्रा मार्ग व्यापर (ट्रेड)मार्ग युद्ध फिल्म, वृत्तचित्र, साहित्य, लेख, लिखित रिपोर्ट भी हियालय के साथ जुड़े हुए पक्ष है। परंपरागत जीवन शैली, जीवनयापन, प्रवास समुदाय, समाज, मिशनरी भी अध्ययन का एक पक्ष है।

हिमालय से संबंद्धित चुनौतियाँ

बढ़ते शहरीकरण के कारण कचरे एवं प्लास्टिक के बड़े ढेर, अनुपचारित सीवेज, अनियोजित शहरी विकास और यहाँ तक कि वाहनों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि के कारण स्थानीय वायु प्रदूषण की स्थिति का सामना करने लगे हैं। जलवायु परिवर्तन के

कारण हिम और बर्फ के पिघलने से इस क्षेत्र में नई हिमनद झीलें बनती हैं, साथ ही मौजूदा झीलों के जलस्तर में वृद्धि होती है। इससे हिमनद-झील के फटने से उत्पन्न बाढ़ का संभावित खतरा बढ़ सकता है। हिमालय क्षेत्र में लगभग 8,800 हिमनद झीलें हैं जो कई राष्ट्रों में विस्तृत हैं। इनमें से 200 से अधिक झीलों को खतरनाक या संकटग्रस्त के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

राजमार्ग विकास परियोजना के माध्यम से सभी सूदूर क्षेत्रों को सभी मौसमों में मुख्य भूमि से कनेक्टिविटी प्रदान करने के उद्देश्य से पहाड़ी सड़कों का निर्माण व चौड़ीकरण किया जाना यहां एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

हिमालय में वन, जल, जैव विविधता, जैविक एवं विशिष्ट खाद्य पदार्थ, प्रकृति पर्यटन सहित भूभाग के प्राकृतिक संसाधनों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिये, साथ ही विशिष्ट खतरों को संबोधित करना चाहिये ताकि विकास पर्यावरणीय क्षरण का कारण न बने। हिमालयी क्षेत्र के शहरों के बिल्डिंग डिज़ाइन में भूकंपीय नाजुकता और सुंदरता को शामिल करते हुए स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को प्रतिबिंबित किया जाना चाहिये। अप्रबंधित और अनियंत्रित शहरी विकास की अनुमति नहीं दी जानी चाहिये। इसके लिये इन शहरों में सुदृढ़ नियामक संस्थाओं की आवश्यकता होगी। पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि अभ्यासों पर विचार कर हिमालयी राज्यों में वन मूल्य में सुधार के लिये एक साझा नीति विकसित की जानी चाहिये।

हिमालय क्षेत्र में पर्यटन के विकास को संवहनीय तरीके से प्राप्त करने के लिये उपयुक्त तंत्र तैयार किया जाना जो जैव विविधता पर न्यूनतम प्रभाव डालने के साथ ही स्थानीय समुदाय के लिये संवहनीय आजीविका विकल्प प्रदान करे।

हिमालयी भूभाग के संरक्षित क्षेत्रों, जैसे लद्दाख के हेमिस राष्ट्रीय उद्यान और काराकोरम अभयारण्य में अवांछित वन्यजीव-पर्यटक संपर्क को कम करने के साथ-साथ ऑफ-रोड ड्राइविंग एवं अतिक्रमण के कारण पर्यावास विनाश को कम करने के लिये सतर्कता और नियमित गश्त की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:

इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए हिमालय की समग्र, और उचित परिचय छवि निर्माण करने का उद्देश्य पूर्ण करने हेतु यह कार्य योजना तैयार की गई है। इस कार्य को आगामी इन 3 वर्ष के सह अध्येता प्रवास के दौरान पूरा करने का लक्ष्य लेकर पुस्तकों का अध्ययन और साहित्य सृजन कर इसे हासिल किया जाएगा।